'ब्रह्म सत्यं जगत् स्फूर्तिः, जीवनं सत्यशोधनम्'

विनोबा-प्रवचन

(सप्ताह में तीन बार—मंगल, गुरु और शनि को प्रकाशित)

वर्ष ३. अंक ५४ | वाराणसी, गुरुवार, ७ मई, १९५९ | पचीस रुपया वार्षिक

ग्रामों-द्योग केन्द्रों के विद्यार्थियों से

राजपुरा (पंजाब) २८-४-'५९

शरीर-श्रम की साधना में ही सारी समस्याओं का हल निहित है

आजकल देश में ग्रामोद्योग की जरूरत सभी लोग महसूस करते हैं। सर्वोदय-विचार में ग्रामोद्योग का महत्त्व जाहिर ही है। लेकिन दूसरे लोग भी (कुछ समाजवादी, कुछ साम्य-वादी वगैरह) समझने लगे हैं कि कम-से-कम गरीबों की तरक्की के लिए, देश की तरक्की के लिए ग्रामोद्योग जरूरी हैं। लेकिन मुख्य बात मेरी निगाह से यह है कि बहुत सारे मध्यम वर्ग के लोग ग्रामोद्योग की तालीम पाते हैं और उन्हें कुछ-न-कुछ काम मिल जाता है तो वह एक प्रकार की नौकरी हो जाती है। जीवन का कुछ-न-कुछ साधन हो जाना यह खराब बात नहीं, फिर भी मैं यही चाहता हूँ कि आप सब उद्योग सीखें और उसके अलावा एक गुण और हासिल करें।

शरीर-स्वास्थ्य संभालिये

शरीर से श्रम करने की प्रीति, आदत और शक्ति होनी चाहिए। कुछ लोगों को बचपन से ऐसी तालीम मिलती है, जिसमें शरीर-परिश्रम नहीं होता। फलतः उनमें शरीर-परिश्रम करने की शक्ति नहीं होती है। अतः उसे हासिल करना चाहिए। अर्थात् ऐसा स्वास्थ्य बनाना चाहिए, जो शरीर-परिश्रम कर सके। बहुत-से पढ़े-लिखे लोग ऐसे होते हैं, जिनका स्वास्थ्य पाँच-पाँच, छह-छह घण्टे सतत परिश्रम करने के लिए अनुकूल नहीं होता। वे दिमाग का काम कर लेते हैं, बहुत पढ़ लेते हैं। रात में देरी से सोते हैं, जिससे पचन-शक्ति क्षीण हो जाती है और शरीर से परिश्रम करने की शक्ति नहीं रहती। उसे हासिल करना होगा। अगर इसमें मध्यम वर्ग के लोग पड़ें तो जीनत, शोभा आयेगी। जब मजदूरों को शरीर से परिश्रम करने की आदत हो जाती है तो आपको भी वह हो ही जायेगी। उससे रात में नींद अच्छी आयेगी, स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। शरीर को ठंढ, धूप और बारिश सहन कर सके, ऐसा मजबूत बनायें, ताकि शरीर-परिश्रम की शक्ति हासिल हो।

आदत के बिना शरीर कमजोर होगा

दूसरी बात शरीर-परिश्रम की आदत डालना है। शरीर में ताकत भी हो और आदत न हो तो मुश्किल होती है। इसलिए रोज दो-चार घण्टे शरीर-परिश्रम करते रहना चाहिए। आदत न रही तो शरीर कमजोर हो जाता है। हमें आठ साल से पदयात्रा की आदत हो गयी है। कहीं काम के लिए दो दिन रहना पड़ता है, जैसे यहाँ नयी तालीम के सम्मेलन के लिए रहना पड़ा तो भी शरीर आलसी न बने, आराम की आदत न पड़े, इसके लिए हम घूम ही लेते हैं। अगर शरीर को आराम की आदत पड़ेगी, तो वह कमजोर होगा।

काम की इज्जत कीजिये

जैसे शरीर-परिश्रम के लिए आदत और शक्ति चाहिए, वैसे इज्जत भी महसूस होनी चाहिए। शिक्षितों में यह नहीं होती। आज लोग ग्रामोद्योग का काम सीखने के लिए आते हैं, वेतन भी मिलता है, यह अच्छा ही है। किन्तु ग्रामोद्योग सीखने पर भी अगर यह गुण हासिल न करें तो देश की सेवा अच्छी न हो सकेगी। इसलिए काम की प्रीति होनी चाहिए। कहीं गन्दगी पड़ी हो तो यह कहना न पड़े कि साफ करो। इस प्रकार काम करने पर दिल को खुशी होती है। शरीर-परिश्रम करने की आदत हो जायगी तो यह खुशी आप भी अनुभव करेंगे। काम करते समय यह भावना होनी चाहिए कि हम भगवान की पूजा कर रहे हैं। देहात के लोगों को ये काम करने ही पड़ते हैं, पर उनके मन में भी इनके प्रति इज्जत नहीं है। जो शरीर-परिश्रम नहीं करते, उनके मन में शरीर-परिश्रम की इज्जत नहीं है और जो करनेवाले हैं, उनके मन में भी नहीं है। वे लाचारी से शरीर-परिश्रम करते हैं। यह शोचनीय बात है। इन दिनों जगह-जगह हाईस्कूल के लिए मकान खड़े किये जाते हैं। पंजाब में और दूसरे प्रांतों में भी हमने यही देखा है। क्योंकि गाँव के लोग चाहते हैं कि हमारे बच्चों को तालीम मिलनी चाहिए। अच्छा है, बशर्ते इसमें ज्ञान की इच्छा हो। परन्तु इच्छा तो यह होती है कि हमारा बच्चा मजदूरी से बच जाय। कोई यह नहीं चाहता कि मेरा बच्चा भी मेरे जैसी खेती करे। यह नहीं सोचता कि खेती का काम करने से हम अपने जीवन की तरक्की कर सकते हैं और मानवता का विकास भी कर सकते हैं। वह यही चाहता है कि मेरे लड़के काम से बचें। इसका कारण यही है कि ऐसे कामों के लिए तनख्वाह ऊँची रहती है। हमने दर्जे बना रखे हैं, जो देश को बिलकुल खतम करनेवाले हैं। यह बहुत बुरी चीज है।

इससे देश कभी नहीं उठ सकता। जिस देश के लोग शरीर-परिश्रम की इज्जत नहीं करते, वह देश ऊपर नहीं उठ सकता।

महापुरुष भी अपना काम खुद करते थे

भगवान कृष्ण, मुहम्मद, नामदेव, सभी बड़े-बड़े सन्त सत्पुरुष अपना-अपना काम करते थे। उनके मन में उसके लिए इज्जत थी। आज हमारे मन में वैसी इज्जत नहीं है और लाचारी से काम करते हैं। यह बहुत बड़ा खतरा है। मजा यह है कि शरीर-परिश्रम से हम घृणा करते हैं और उसे तत्त्वज्ञान का रूप भी देते हैं। इस देश में हर चीज को तत्त्वज्ञान का रूप दिया जाता है। भक्त काम नहीं करेगा, ऐसा माना जाता है। महात्मा गांधी के आश्रम में विजिटर्स देखने आते थे। एक बार महात्मा गांधी चक्की पीस रहे थे कि कुछ लोग वहाँ आये। कहने लगे कि 'चक्की पीसने में यह महात्मा कितना समय गँवा रहा है।' मैंने कहा—'सिर्फ चक्की पीसने के लिए ही नहीं, बल्कि तरकारी काटने और बुनाई का काम करने के लिए भी महात्माजी समय देते हैं। आप इसे या तो 'यह महात्मा है और इसी में इनका महात्मापन है' ऐसा मानिये या 'ये महात्मा नहीं, पागल हैं' ऐसा मानिये। अगर इन्हें महात्मा मानते हैं, तो उनका अनुकरण कीजिये।'

यह नया वर्ग-भेद

जिन्होंने अंग्रेजी तालीम पायी, वे ऊँची जमातवाले लोग थे। उस तालीम में उन्होंने काम की आदत नहीं रखी। दूसरे देशों में तालीम में काम की आदत होती है। परन्तु इस देश में अंग्रेजों ने नौकर-वर्ग बनाया और ऊँचे लोग भी अपनी मातृभाषा भूल गये और काम करने की आदत उन्हें न रही। यहाँ जो जातिभेद रहा, उसके कारण तो भेद थे ही, उसमें वर्ग-भेद का और इजाफा हो गया। इसके कारण जो भावना आयी, उससे शिक्षित और अशिक्षितों में एक दीवार खड़ी हो गयी। इसी कारण हमारे देश में वर्ग-भेद का एक नया झगड़ा शुरू हुआ।

मैं इतना ही कहूँगा कि काम के लिए आपको इज्जत और प्रेम होना चाहिए। बिना प्रेम के और इज्जत के सेवा तो होगी ही, पर वह अच्छी नहीं होगी। काम तो होगा, लेकिन जिस हेतु से यह काम शुरू हुआ है, वह हेतु पूरा नहीं होगा। इसलिए काम के लिए शरीर अच्छा मजबूत बनाओ और काम के लिए प्रीति और आदत रखो।

◆◆◆

स्वागत-प्रवचन

पटियाला (पंजाब) २५-४-'५९

कर्मक्षेत्र और प्रेमक्षेत्र को जोड़िये

भक्तिमार्ग में जप का बहुत महत्त्व माना जाता है। साधक सतत जप करता है तो उसके चित्त को शक्ति बढ़ती है। चिंतन-पूर्वक मनन करते हुए जब जप चलता है तो विचार की ताकत बढ़ती है। आठ साल से हमारी यात्रा भारत में चल रही है। एक तरह से यह हमारा जप ही चल रहा है। रोज नया स्थान, रोज नये चेहरे देखने को मिलते हैं और हम अपना जप किया ही करते हैं। उससे विचार दिन-ब-दिन गहराई में जा रहा है। विचार की गहराई में पहुँचते-पहुँचते नित्य नया रत्न, हीरा, माणिक मिल रहा है। खोज चल रही है। नये-नये विचार सूझ रहे हैं।

कर्मक्षेत्र की नयी व्याख्या

पहले हम साधारण जमीन माँगते थे। फिर भूदान से संपत्तिदान, जीवनदान, ग्रामदान और अब हम ग्रामस्वराज्य की बात करते हैं। इस ग्रामस्वराज्य की हिफाजत के लिए शांति-सैनिकों की माँग की है। शान्तिसैनिकों के लिए लोकसम्मति के तौर पर हमने घर-घर सर्वोदयपात्र रखने के लिए कहा। अब पंजाब में आने के बाद हमने कहा है कि हमारा कर्मक्षेत्र और प्रेमक्षेत्र एक हो। जहाँ ये दोनों क्षेत्र एक हो जाते हैं, वहाँ 'धर्म-क्षेत्र' हो जाता है। यह बहुत ही बड़ा विचार सूझा है।

यह पटियाला तो पंजाब का हृदय ही है। यहाँ से लेकर काबुल, सतलज और सिंधु तक जो हिस्सा है, वह शायद हमारे पूर्वजों का मूल स्थान है। जहाँ से आरम्भ में वेदवाणी और अन्त में गुरुवाणी निकली है। वेदों से लेकर गुरुवाणी तक कई विचारों के दर्शन प्रकट हुए और खोज हो चुकी है। अब हमने यह एक नया ही विचार प्रकट करना शुरू किया है—'प्रेम और कर्म का क्षेत्र एक हो जाय।' हमारे काम के साथी अलग होते हैं और प्रेम के साथी अलग। इस तरह टुकड़े-टुकड़े हो गये हैं। प्रेम के लिए तो बहन, माँ, लड़की, लड़के हैं। पर काम के साथी कौन हैं? शिक्षक का काम का साथी दूसरा शिक्षक है, मजदूर का काम का साथी दूसरा मजदूर है। इस तरह कर्मक्षेत्र और प्रेमक्षेत्र अलग-अलग हैं। जहाँ ऐसा होता है, वहाँ इन्सानियत नहीं पनपती, धर्म उत्पन्न नहीं होता है। यह हमने देखा है। गुरुओं की बात भी देखी है। अर्जुनगुरु का द्वेष करनेवाला (मुझे पूरा याद तो नहीं है) उनका भाई ही था। वह उनसे बहुत द्वेष करता था। महापुरुषों का द्वेष करनेवाला भाई ही निकला। खैर, ये पुरानी बातें हो गयीं। हम अपने जीवन में देखें, वहाँ भी हमारे प्रेमके साथी और काम के साथी अलग दीखेंगे। ऐसी जगह धर्म प्रकट नहीं होगा। धर्म वहीं प्रकट होता है, जहाँ यह कोशिश होती है कि जो काम के साथी हैं, वे ही प्रेम के साथी हैं। सिर्फ दो साथी एक हों, ऐसी बात नहीं—हमारे दोनों क्षेत्र ही एक हों।

हम सच्चे कैसे बनें?

हम गृहस्थाश्रम को समाज पर बोझ मानते हैं या भोग का साधन। हम समाज में काम करते हैं, तो प्रेम देना पड़ता है। लेकिन बहुत सारा प्रेम सुरक्षित कर रखा है। थोड़ा सा ही हिस्सा मित्रों के लिए खोल दिया जाता है। लेकिन जहाँ काम की बात होती है, वहाँ प्रेम की बात कम हो जाती है। उनके वहाँ सिर्फ काम की ही बातें होती हैं। इसके विपरीत खाने की, दिल्लगी की, प्रेम की बातें घर में होती हैं तो वहाँ काम की बातें नहीं होतीं। इस तरह टुकड़े बनते जा रहे हैं। यह जीवन हमें बदलना होगा। इसलिए जब हम ग्रामदान की बात रखते हैं तो यह बड़ी बात कहते हैं। हम अपने पड़ोसी के साथ संबंध रखते हैं तो काम का रखते हैं और घर के साथ प्रेम का संबंध। पड़ोसी के साथ प्रेम बिलकुल नहीं होता, ऐसा नहीं। किन्तु वहाँ कर्म प्रधान है, प्रेम गौण है। इसके कारण बिलकुल कशमकश चलती है। जीवन के दो टुकड़े हो जाते हैं। सच्चाई प्रकट नहीं होती। यह भेद कैसे टूटेगा, यह झूठ की दीवाल कैसे टूटेगी? हम सच्चे कैसे बनेंगे? यही मेरा चिंतन चल रहा है।

हम प्रेमवाले से पूरी बात नहीं करते—अपने काम की बात नहीं करते। इसी तरह काम के साथियों के साथ प्रेम की बातें नहीं करते तो सचाई प्रकट नहीं होती। ऐसे ही भाई-भाई के बीच, पति-पत्नि के बीच भी परदा होता है। हमारे काम की चर्चा हम उनसे कभी नहीं करते, यह घर की हालत है। वहाँ प्रेम का सच्चा स्वरूप नहीं आया। साथी भी हमारे होते हैं। लेकिन ऐसा नहीं होता है कि उनके लिए हम मर मिटने के लिए तैयार हों। मित्रों के साथ भी हम दिल की पूरी बात नहीं करते। मन की कुछ मुश्किलें होती हैं। अतः हम सच्चे कैसे बनें, यही समस्या है।

हमारे बीच यह जो झूठ की दीवाल खड़ी होती है, वह कैसे मिटे? यह दीवाल तरह-तरह के रूप लेकर खड़ी होती है। कभी जातिवाद, कभी भाषावाद, कभी प्रांतवाद के झगड़े खड़े होते हैं। पर यह सारे उस झूठ दीवाल के रूप हैं। हमारे सामने ये रूप खड़े हो जाते हैं तो हमें भान होता है कि यही सत्य है। इस तरह तरह-तरह के झूठ सत्य का स्वाँग लेकर हमारे सामने आते हैं।

झूठ जब सत्य का आवरण लेता है

अभी हमारे सामने बात आयी थी—सिक्खों के झगड़े की। हम उन्हें जरूर मदद पहुँचाना चाहते हैं। कल थोड़े में हमने कहा था कि आखिर सिख पैदा क्यों हुए हैं? उनकी जरूरत क्या थी? हरएक चीज की जरूरत होती है। उनकी इसीलिए जरूरत थी कि बड़ी-बड़ी जमातें आपस में लड़ रही थीं। उनकी लड़ाइयाँ खतम करने के लिए और सब में एकता निर्माण करने के लिए सिखों की जमात तैयार हुई। उनकी जमात एक छोटी सी जमात थी, परन्तु सबके झगड़े खतम करने की ताकत उसमें थी। इस तरह यह मदद करनेवाली जमात थी। अब हमारी समझ में यह बात नहीं आती कि धर्मों के बीच अल्पमत और बहुमत के झगड़े क्यों आयें? हम इसे पाप समझते हैं। ऐसे झगड़े तो राजनीतिक दलों में होते हैं। मैं तो चाहता हूँ कि वहाँ भी ये झगड़े न रहें। किन्तु मजहब में ये झगड़े दाखिल हों तो वहाँ भी एक 'पावर-पालिटिक्स' आ जायगा। शक्ति का जरिया मंदिर, मस्जिद, गुरुद्वारा क्यों हो? इससे फिर झूठ खड़ा हो जायगा और वह भी सत्य का रूप लेकर। झूठ के ही रूप में वह आता तो कभी टिक न पाता। अन्धकार जब असली रूप में आता है, तो प्रकाश के सामने एक क्षण के लिए भी नहीं टिक सकता। रावण की क्या मजाल थी कि वह सीता के सामने खड़ा हो? परन्तु वह ब्राह्मण का रूप लेकर आया, इसीलिए सारा झमेला खड़ा हुआ। अतः हमें यह पहचानना चाहिए कि सत्य भी झूठ का रूप लेकर खड़ा होता है। हमें सत्य के लिए मर मिटना चाहिए, अड़े रहना चाहिए।

कुछ भाई मुझसे कहते थे कि आपको सत्याग्रह करना चाहिए। मैंने कहा: 'अरे भाई, मूल में सत्य हो, तभी न? सत्य का जो भास रहता है, वह कैसे दूर होगा? झूठ का परदा, झूठ की दीवाल जो हमारे सामने खड़ी है, वह कैसे हटेगी? हम कुछ बातें प्रेम के साथी के साथ करते हैं और कुछ बातें काम के साथी के साथ। इससे पूर्ण सत्य प्रकट नहीं होता। न जबान में प्रकट होता है, न आचरण में और न विचार में ही। इसीलिए झगड़े पैदा होते हैं और विज्ञान के इस जमाने में छोटे-छोटे झगड़ों का स्वरूप एकदम बड़ा हो जाता है। छोटे-छोटे झगड़े भी एकदम अखिल भारतीय, अखिल जागतिक रूप लेकर खड़े हो जाते हैं। हमें यह ध्यान में रखना चाहिए कि जमाना विज्ञान का आया है, अतः अब छोटे दिल और बड़े दिमाग से नहीं चलेगा। विज्ञान सत्य की खोज के लिए ही आया है। सौ साल पहले विज्ञान यह मानता था कि हमें सब कुछ पता चला है और कुछ भी बाकी नहीं रहा है। लेकिन धीरे-धीरे वह अब गहराई में जा रहा है। और इस जमाने में वैज्ञानिक बहुत नम्र हैं। कहते हैं कि नहीं, अभी हमें पूरा ज्ञान प्राप्त नहीं हुआ है।

अल्प-ज्ञान में बड़ा खतरा होता है। पूरा ज्ञान भी न हो और श्रद्धा भी खो दी हो तो खतरा ही होगा। इसलिए इस जमाने में पूरी श्रद्धा चाहिए या पूरा ज्ञान। हमें मसले हल करने हैं तो पूर्ण सत्य का दर्शन होना चाहिए और उसके लिए प्रेम और कर्म का क्षेत्र एक हो जाना चाहिए।

श्रद्धा, प्रेम और विश्वास अत्यावश्यक

मैं अपने साथियों से कहता हूँ (...अब मेरे साथी भी कौन हैं, यही सवाल है। इसलिए जो मेरे साथी बनकर सामने आते हैं, उन्हीं से मैं कहता हूँ) कि संशयवाली बात तो राजनीति में आती है। इसलिए यह संशय तभी दूर होगा, जब वह दर्शन होगा 'उतर गयो मेरे मन का संशय। जब ते दर्शन ने पाया।' परन्तु संशय को तो राजनीति का प्राण समझते हैं। सामनेवाले का फलाना-फलाना हेतु होगा, इस तरह का संशय रखना राजनीति में सबसे बड़ी बात मानी जाती है। लेकिन ऐसे राजनीतिज्ञ अब 'आउट-आफ-डेट' पुराने हो गये हैं, फिर भी रंगभूमि पर काम कर रहे हैं और एक दूसरे के लिए मन में संशय रखते हैं। यह राजनीति सारी दुनिया को सता रही है, खतम कर रही है। किन्तु विज्ञान के जमाने में आखिर यह खतम ही होनेवाली है। अगर संशयवाली राजनीति चली तो ऐसे औजार हाथ में आये हैं कि उससे हम कट मरेंगे। इसलिए श्रद्धा, प्रेम और पूरा विश्वास होना चाहिए। आज हमारे जीवन में श्रद्धा और विश्वास नहीं रहा है और प्रेम भी नहीं है। हमारा काम इसलिए आगे नहीं बढ़ता कि पूरा प्रेम प्रकट नहीं हो रहा है। न काम के साथी के साथ पूरा प्रेम प्रकट होता है, न प्रेम के साथी के साथ। आखिर ऐसे झूठ में ही जीवन गुजरता है और समाधान नहीं होता है। मन में हमेशा यह सदमा रहता है, असमंजस रहता है कि यह मैं ठीक कर रहा हूँ या नहीं।

सत्ता का विकेन्द्रीकरण करना होगा

आज हमने अपना भला-बुरा करने की पूरी सत्ता चन्द लोगों के हाथ में दे रखी है। हम जनता के लिए, जनता के हित के लिए काम करते हैं और पाँच साल के लिए हमारी हुकूमत चलाते हैं। परन्तु विज्ञान के जमाने के पाँच साल पहले के जमाने के १०० साल के बराबरी के हैं। इन पाँच सालों में अगर हम देश को गलत रास्ते पर ले जाना चाहें तो ले जा सकते हैं। अभी चीन ने तिब्बत पर हमला किया, और अब वहाँ कम्युनिस्ट सरकार आयी है। कोई भी सरकार हो (फिर वह चाहे कम्युनिस्ट हो, लोकतान्त्रिक हो या कल्याणकारी राज्य), उसमें सारी सत्ता का केन्द्रित रहना कभी उचित नहीं है। भगवान ने भी अक्ल का भंडार सिर्फ अपने पास नहीं रखा, सबको बाँट दिया है। इसीलिए वह सुख से समुद्र में सोता है। कितनों को पता तक नहीं चलता कि भगवान हैं भी या नहीं। सुन्दर और सर्वोत्तम सरकार वही है, जिसके बारे में 'वह है या नहीं'

ऐसी शंका हो। वही सर्वोत्तम इन्तजाम माना जायगा। सरकार तो सबको जोड़नेवाली कड़ी होनी चाहिए। इस तन्त्र विज्ञान के जमाने में पूरी श्रद्धा रखनी होगी। प्रेम-क्षेत्र और कर्म-क्षेत्र को एक करना होगा। सत्ता का विकेन्द्रीकरण करना होगा। तभी दुनिया के मसले हल होंगे।

आज पंजाब में जो मसले हैं, वे पंजाब के नहीं, सारे हिन्दुस्तान के हैं। आज ही एक भाई ने सवाल पूछा था कि 'आप सरकार को कानून बनाने के लिए क्यों नहीं कहते? व्यर्थ ही क्यों घूमते हैं?' मैंने कहा आप आइये और काम कीजिए। कोई कानून बनाता है तो हम किसी को रोकना नहीं चाहते। एक नागपुर का छोटा सा प्रस्ताव किया और उसके खिलाफ आवाज उठी, तो कहने लगे कि 'हम ज्यादा कुछ नहीं करेंगे, हम छोटी-छोटी सहकारी समितियाँ ही करेंगे।' फिर जमीन की मालकियत मिटाने का कानून करने की हिम्मत कौन करता है? इसमें सिर्फ 'हिम्मत' का ही सवाल नहीं है, हिकमत भी चाहिए। आप कानून करेंगे और उसका अमल न हो तो बन्दोबस्त करने के लिए पुलिस भेजेंगे। उसके अन्तरराष्ट्रीय परिणाम क्या होंगे? सम्भव है कि बहुत उथल-पुथल भी होगी और इसलिए मसला पंजाब का नहीं, भारत का हो जायगा। वह भारत तक ही सीमित नहीं रहेगा, जागतिक भी हो सकता है। खैर, यह समझने की बात है कि विज्ञान के जमाने में एक विश्व बन रहा है।

१५०-२०० साल हिन्दुस्तान पर अंग्रेजों ने कब्जा रखा था। लेकिन इंग्लैण्ड की जनता ने इसके विरुद्ध आवाज नहीं उठायी और १५०-२०० साल हिन्दुस्तान का खूब शोषण चला। किन्तु अब मिश्र पर जब ब्रिटेन ने हमला किया तो एक-दम इंग्लैंड की जनता ने सरकार के खिलाफ आवाज उठायी और लंदन में जुलूस निकाले गये। आखिर ब्रिटेन को हमला वापस लेना पड़ा और उस समय के प्रधान मंत्री को पदत्याग करना पड़ा। यह क्यों हुआ? 'इमरे नागी' को फाँसी पर लटकाया गया तो कुल दुनिया में होहल्ला मचा। पुराने जमाने में पानी-पत की इतनी बड़ी लड़ाई हुई, तो भी जापान को उसका पता नहीं चला। किन्तु आज एकदम ऐसी कोई घटना हो जाती है, तो 'बड़ा अन्याय हुआ' कहकर दुनिया में हलचल मच जाती है। इसका कारण यही है कि एक सद्विचार बन रहा है।

हम कोई भी अच्छा काम करें तो दुनिया में फैलता है और बुरा काम करें, तो भी दुनिया में फैलता है। इसलिए अच्छाई करेंगे तो दुनिया में फैलेगी और बुराइयों का मौका तो अब गया। अब हमें यह सिद्ध करना होगा कि अन्तर्राष्ट्रीय क्षेत्र में तो नहीं, परन्तु कम-से-कम राष्ट्रीय क्षेत्र में पुलिस की जरूरत नहीं है। हम शांति से और प्रेम से मसले हल करें। अब तो दुनिया में ऐसी ताकतें पैदा हो रही हैं कि मैं यहाँ बोल रहा हूँ तो कुल दुनिया के लोग सुन और देख सकते हैं। शब्द महदूद, संकुचित नहीं रहा है। वह कुल दुनिया में फैलेगा। इसी तरह हम अमर राजनीति के अल्पसंख्यक-बहुसंख्यक के मेजारिटी-मेनारिटी के झगड़े और अविश्वास की राजनीति चलाते हैं तो दुनिया के लिए बहुत बड़ा खतरा पैदा करते हैं, यह समझना होगा। इसलिए ऐसा मत समझो कि यह हमारे घर का मसला है। अगर हम अपने मसले सुलझाते हैं तो सारी दुनिया को मदद पहुँचाते हैं और बिगाड़ते हैं तो सारी दुनिया की हवा बिगाड़ते हैं। हमारी कोशिश यह होनी चाहिए कि हम अच्छाई करें, बुराई न करें।

आज स्थानीय प्रश्न भी जागतिक

भूदान और ग्रामदान का यह विचार लेकर मैं पंजाब आया हूँ तो यही चाहता हूँ कि सबका दिल एक हो जाय। उसका कुल दुनिया पर परिणाम होगा। आज हिंदुस्तान के लिए दुनिया में एक आशा की दृष्टि है। आप देखते हैं कि दलाईलामा यहाँ आया है। हिंदुस्तान में ऐसी कोई घटना आज तक नहीं हुई, जिसमें हम ऐसा देख सकें कि हिंदुस्तान ने किसी देश पर हमला किया है। अब सारी दुनिया एक हो रही है। पुराने जमाने में जो तोड़ने-वाली चीज थी, वह आज जोड़नेवाली बन गयी है। अमेरिका और चीन और जापान के बीच बहुत बड़ा समुद्र पड़ा है। एक जमाना था, जब यह समुद्र इन दोनों देशों को तोड़ता था। आज वही समुद्र इन दो देशों को जोड़ रहा है और ये देश आज पड़ोसी देश बन गये हैं। इसलिए आप सोचिये कि जड़-पदार्थ भी जो तोड़नेवाले थे वे जोड़नेवाले हो गये हैं तो हम चेतन होकर क्या तोड़नेवाले, फोड़नेवाले बनेंगे? एक कुत्ता भी हजारों मील ऊपर चला जाता है। क्या आपका दिल और दिमाग यहीं जमीन पर रहेगा? जिस जमाने में मनुष्य मंगल वगैरह पर जाने कि कोशिश कर रहे हैं, उस जमाने में छोटे दिल से काम नहीं होगा। इसलिए भाइयो! दिल बड़ा बनाइये। कुरान में एक वाक्य आता है 'उम्मतुम् वाहिद' याने सारी दुनिया एक ही है। सारी दुनिया के संत-पुरुष पैगंबर एक ही कौम के हैं। इसलिए हमें एक होकर मसले कैसे हल करें, यह सोचना चहिए।

मान लीजिये कि ग्रामदान से डर पैदा होता है तो मैं कहूँगा कि ऐसे ग्रामदान मुझे नहीं चाहिए। मैं कहूँगा कि ग्रामदान में लोगों में टुकड़े नहीं होंगे। ग्रामदानी गाँव में सब एक जमात होगी। ग्रामदान याने जोड़नेवाली चीज है। इसलिए तोड़ने-वाली चीज हमें नहीं चाहिए। मैं जाहिर चर्चा करता हूँ कि ग्रामदान याने अभयदान। जहाँ-जहाँ टुकड़े होते हैं, वहाँ-वहाँ हमें जोड़ना चाहिए। पंजाब में यह ग्रामदान का काम खूब चलना चाहिए। इसके लिए मैंने सूत्र निकाला है कि जहाँ प्रेम-क्षेत्र और कर्म-क्षेत्र अलग-अलग कर दिया है, वहाँ जीवन के टुकड़े हो गये। हमारा प्रेम-क्षेत्र और कर्म-क्षेत्र एक हो जाना चाहिए।

आज हम पटियाला में याने पंजाब के हृदय में पहुँचे हैं। यह विचार आपको न जँचे तो आप फेंक दीजिये और मेरे पास रहने दीजिये। अगर जँचे तो आपही इसे घर-घर पहुँचा दीजिये और प्रचार कीजिये। मेरी न कोई संस्था है, न साथी ही। आपही सारे मेरे कार्यकर्त्ता हैं, साथी हैं। इसलिए आपसे आशा रख कर मैं यहाँ आया हूँ।

◆◆◆

संगरूर जिले के खादी कार्यकर्ता और भू-दान सेवकों से

कनौली-पक्खी (पंजाब) १९-४-'५९.

खादी के चिन्तन को नई दिशा दीजिये

यह क्षेत्र हमारी बहन अन्तुस्सलाम का है। यह बहन गांधीजी के पास काफी अरसे तक रही है। उनका और हमारा वर्षों से पुराना सम्बन्ध है। उनके जैसी दैवी मूर्ति आपके सामने खड़ी है, जो निरंतर सेवा की भावना रखती है और सेवा के सिवाय और कुछ चाहती नहीं है।

खादी के काम से संतोष नहीं

मैं मानता हूँ कि खादी के कार्यकर्त्ता भू-दान के लिए हमदर्दी रखते होंगे। खादी के कार्यकर्त्ताओं को ऐसी भावना से काम नहीं करना चाहिए कि हम कोई व्यापार कर रहे हैं। सेवा, उपासना और भक्ति करने की भावना से काम करना चाहिए। और वे करते होंगे, ऐसी मैं आशा करता हूँ। यद्यपि सारे भारत के सब सूबों में मैं जा चुका हूँ। कश्मीर और हिमालय प्रदेश तो जाना ही है। आसाम रह गया है। परमेश्वर चाहेगा तो वह भी देखना है। लेकिन बाकी का बहुत सा हिस्सा देखा है। जगह-जगह खादीवालों को देखा है। जो देखा है, उससे मुझे सन्तोष नहीं हुआ है।

स्वराज्य की भावना निकली, तब गांधीजी ने खादी का एक रचनात्मक कार्य देश के सामने रखा और उस पर बहुत जोर दिया। हम खादी का काम करेंगे, खादी पहनेंगे तो गरीबों के साथ एक होने का मौका मिलेगा और जन-शक्ति जागृत होगी, जो अंग्रेजों के जमाने में दूसरे तरीके से जागृत होना सम्भव नहीं था। उद्योग-धन्धे तोड़े गये थे, परदेशी व्यापार शुरू हुआ था, सरकार यन्त्रोद्योग चलाती थी, परदेश का माल लाती थी, उस हालत में हमारे लोग गरीबों की सेवा में लगेंगे तो स्वराज्य के लिए जो भावना पैदा होनी चाहिए, वह पैदा होगी। इसलिए खादी का सम्बन्ध स्वराज्य की भावना से जोड़ दिया गया था। उस समय भी कितने ही राजनैतिक कार्यकर्त्ता ऐसा कहते थे कि सूत कातने से स्वराज्य के साथ क्या सम्बन्ध आता है? लेकिन गांधीजी का एक विचार था, उनकी एक ताकत थी, इसलिए किसी-न-किसी तरह से उनके साथ लोग हो जाते थे। लेकिन यह जो स्वराज्यकी भावना थी, वह निर्माण करने का साधन खादी हो सकता है यह लोग मानने लगे थे। कुछ हद तक खादी की यह बात लोगों को जँच गयी, बहुत जँच गयी, ऐसा नहीं। पं० नेहरू ने एक सुंदर जुमला कहा है। उन्होंने कहा है कि यह खादी आजादी की वर्दी हो सकती है।

खादी आपके बल पर खड़ी होगी

अब कुछ लोग पूछने लगे कि आजादी तो मिल गयी है, अब यह खादी अपने पाँवों पर खड़ी होनी चाहिए। अपने पाँव पर खड़ा होने के लिए खादी क्या बैल है? घोड़ा है? किस के पाँव पर वह खड़ी होगी? भाई तेरे पाँव पर ही खड़ी होगी। माँ ने बच्चे का पालन-पोषण कर लिया, बच्चा बड़ा हो गया और अब वह माँ को कहता है कि हे माँ तू अपने पाँव पर खड़ी हो जा। तब माँ क्या कहेगी? वह कहेगी—बच्चे! अब तू मेरी सेवा कर। वैसे ही खादी कहने लगी है। इस तरह पूछनेवालों को हम कहते हैं कि भाई! खादी आपके बल पर ही खड़ी होगी। और आपको खादी को बल देना चाहिए।

मिल के मुकाबले में बाजार में खादी खड़ी हो, यह कभी नहीं हो सकता है। मिल के पीछे जैसा जोर है, वैसा जोर और बल खादी के पीछे आज नहीं है। पहले जो परिस्थिति, थी वह आज काफी बदल गयी। खादी रोजगार देती है। उसका भार अगर मिल के कपड़े पर डाला जायेगा, तो वह कितना महंगा होगा? खादी महँगी क्यों मिलती है? वह जिम्मा क्यों उठाती है? क्योंकि खादी लोगों को काम देती है। मिल का कपड़ा गैर-जिम्मेदार है। इसलिए वह जिम्मेदारी उसकी है। खैर, इस हालत में मिल के मुकाबले में खादी खड़ी हो सकती है, यह सम्भव नहीं है।

खादी का नया मूल्य

आज खादी का आजादी का जो मूल्य था, वह मिट गया है। अब खादी कुछ बेकार लोगों को मदद देती है। दूसरे-तीसरे उद्योग तो मिलेंगे, लेकिन खादी थोड़े ही दिन में बन्द हो जायगी। क्योंकि रोजगारी मिलती है, इतना ही उसका उपयोग माना जायगा तो वह खत्म हो जायगी। मैं कहना यह चाहता हूँ कि खादी के लिए जो राजनीतिक बल मिलता है, वह पहले से आज बहुत ज्यादा है। खादी से कुछ लोगों को मजदूरी मिलती है, उससे कहीं ज्यादा मिल के कपड़े से मिलती है और पहले से आज ज्यादा मिलती है। लेकिन उस जमाने में खादी की कीमत दूसरी थी। पहले जो कीमत थी, वह आज नहीं रही। उस समय खादी को स्वराज्य के साथ जोड़ दिया गया था। देहातियों के साथ प्रेम से सम्बन्ध जोड़ दिया गया था। उनके मन में स्वराज्य की भावना नहीं होगी तो स्वराज्य को बल नहीं मिलेगा। इसलिए उन लोगों के मन में भी स्वराज्य की भावना निर्माण करने के लिए खादी उनके पास पहुँचाई गयी। उससे स्वराज्य प्राप्त करने में सहूलियत हुई।

अब खादी का काम बदल गया है। ग्राम-स्वराज्य में गाँव के लोग यह संकल्प करें कि हम कच्चे माल का पक्का माल गाँव में करेंगे। उसमें खादी आ सकती है। यही खादी का मुख्य काम है। पहले खादी भावनामय भूमिका पर थी। अब ग्राम-स्वराज्य में खादी का संकल्प होना चाहिए। उसके काम का स्वप्न बदल गया है। मिल पर अगर बम गिरेगा तो मिल बंद पड़ेगी और कपड़ा नहीं मिलेगा। यह पराधीनता देश में आयेगी। इसलिए आज खादी की भावनात्मक नहीं, प्रत्यक्ष जरूरत है। जैसे अनाज के बारे में गाँव स्वावलम्बी नहीं होता है, तो ग्राम-स्वराज्य नहीं माना जाता। वैसे ही कपड़े की बात है। यह बात समझ में आती है। उसके अलावा मजदूरों को मजदूरी मिलती है। लेकिन यह उसका बहुत महत्त्व का पहलू नहीं है। उसका राजनीतिक पहलू पहले से बहुत ज्यादा महत्त्व रखता है। हमने लोगों में आज यह भावना पैदा नहीं की है कि ग्राम-स्वराज्य के लिए खादी का महत्त्व है।

अपनी शक्ति का भान हो

आज लोगों को यह समझाया जाता है कि हमें चुनके दे दो तो हम आपको स्वर्ग में ले जायँगे। दूसरे को वोट दोगे तो वह तुम्हें नर्क में ले जायगा। हर कोई आकर यही समझाता है। कोई यह नहीं कहता कि 'तुम्हारा भला तुम करो। गाँव का भला तुम लोगों के हाथ में है। तुम्हारा स्वर्ग और नर्क तुम्हारे हाथ में है।'–वेलफेयर स्टेट के नाम से प्रजा का भला करेंगे, ऐसी भावना रखते हैं। यह नहीं सोचते हैं कि गाँव का भला गाँव करेगा। जनता का भला हम करेंगे, इस भावना में बहुत ही लोगों के दिमाग उलझे हैं और इसके कारण वे सत्ता के पीछे पड़ते हैं। जो लोग सत्ता में नहीं हैं वे सत्ता की अभिलाषा रखते हुए सत्तासीन लोगों से द्वेष करते हैं। जनता में सीधा जाकर सेवा करने का काम कोई नहीं कर रहा है। भाइयो, हमें सोचना चाहिए कि दुनिया में आज क्या हो रहा है? तिब्बत में क्या हो रहा है? पाकिस्तान में क्या हो रहा है, योरप में क्या हो रहा है? यह सब देखते हुए ध्यान में आयेगा कि हम कहाँ हैं? अगर यह माना जाय कि हम सुरक्षित हैं, तो हम गलती कर रहे हैं, ऐसा होगा।

ग्रामदान की नीव पर हमें ग्राम-स्वराज्य खड़ा करना है और उस ग्राम-स्वराज्य की रक्षा करने के लिए अहिंसक सेना खड़ी करनी होगी। महायुद्ध छिड़ जायगा तो क्या हिंसक सेना गाँव-गाँव का बचाव करेगी? नहीं करेगी। यह ठीक है कि जब हमला होगा तो गाँव टिका रहे, फौरन खत्म न हो, इसके लिए थोड़ा उपयोग होगा। परन्तु सेना के बल से गाँव-गाँव नहीं टिकेंगे। अभी मौका आया था जब स्वेज नहर का सवाल खड़ा हुआ था। तब आयात-निर्यात पर एकदम परिणाम हो गया। ऐसा आज होगा तो अनाज के भाव एकदम बढ़ेंगे। उस समय गाँवों को दिल्ली या चन्डीगढ़ नहीं बचा सकेगा। इसलिए गाँव-गाँव में पूरा अनाज रखना होगा। हमने कहा है कि गाँव में दो साल का अनाज हमेशा रहना चाहिए। तभी गाँव बचेंगे।

गाँव की स्वाश्रयी व्यवस्था

आज मजदूर खेतों में मेहनत करते हैं, फिर भी उन्हें अनाज खरीदना पड़ता है। ऐसी हालत है। आज भी अनाज के भाव बढ़ सकते हैं। कोई कह नहीं सकता है कि दुनिया में कब लड़ाई छिड़ जायगी और अनाज के दाम बढ़ जायेंगे। उस हालत में देश को बचाना होगा, तो गाँव-गाँव की रक्षा के लिए, गाँव मजबूत बनाने के लिए यह बहुत जरूरी है कि ग्राम-स्वराज्य खड़ा किया जाय। जगह-जगह अपना संरक्षण करने की जिम्मेवारी गाँव पर है। यह शक्ति गाँव में आनी चाहिए। इस तरह एक-एक गाँव यूनिट बनेगा और छोटे-छोटे स्टेट जैसा कारोबार उस गाँव में चलेगा। ऊपरवाले लोग कोआर्डिनेशन का काम करेंगे, परदेश के साथ सम्बन्ध रखेंगे तो देश का बचाव हो सकता है। लेकिन आज कुल दारोमदार दिल्ली पर है तो स्वराज्य के लिए बड़ा खतरा है। इसलिए देहात की योजना देहात करेगा, दिल्ली नहीं करेगा। यह हम हमेशा कहते हैं। गाँव की रक्षा के लिए और देश के स्वराज्य की रक्षा के लिए गाँव-गाँव अपने पाँव पर खड़े हों, यह बहुत जरूरी है। फिर ऐसे देहातों में ग्रामोद्योग, खादी, नयी तालीम चलेगी, तभी देश का स्वराज्य टिकेगा, नहीं तो बचना असम्भव है। इसलिए अब हम लोगों को मिलवालों का चैलेन्ज स्वीकार करना चाहिए कि हम अपना कपड़ा गाँव में बनायेंगे। छोटे-छोटे उद्योग सुधरे हुए औजारों से करेंगे। इसीलिए अम्बर आया है।

गाँव का कपड़ा गाँव में ही नहीं बनाते हैं, तो यह संकल्प करना होगा कि हम यहाँ परदेश का कपड़ा नहीं आने देंगे, दो-चार गाँव मिलकर अपना कपड़ा बना लेंगे। कपड़ा, गल्ला, सुधरे हुए औजार गाँव में बनते हैं, तो ग्राम-स्वराज्य बनेगा। बाहर से कुछ नहीं आना चाहिए ऐसा नहीं, परन्तु रोजमर्रा की चीजें गाँव में पैदा होनी चाहिए। परदेश के माल को रोकना चाहिए। इसलिए यह सारा ग्राम-स्वराज्य के लिए जरूरी है।

खादी का आधार

खादीवालों ने इन दिनों रिबेट और कमीशन देना शुरू किया है। अरबों रुपयों का कपड़ा देश को चाहिए, लेकिन मुश्किल से आज दो परसेंट खादी होती होगी। उस हालत में खादी का दावा नहीं रहेगा। इसलिए इसका आधार भूदान हो सकता है। खादीवाले भू-दान के लिए उदासीन रहेंगे तो नहीं टिकेंगे। आखिर सरकार कब तक मदद देती रहेगी? अभी हैद्राबाद में मुरारजी भाई ने कहा कि हम खादी को कबतक मदद देते रहेंगे? खादी को अब अपने पांव पर खड़ा होना चाहिए। इसलिए हम यह विचार समझ लें कि खादी का काम धंधा नहीं हो सकता है। खादी एक विचार है।

सरकारी मदद एक बात है और सरकारी प्रोटेक्शन दूसरी बात। सरकार का प्रोटेक्शन अगर मिलेगा तो खादी टिकेगी। मिल के खिलाफ खादीवालों को सरकार को उत्तेजन देना चाहिए, प्रोटेक्शन देना चाहिए। सरकार की मदद से खादी नहीं टिकेगी। प्रोटेक्शन सरकार का नहीं मिलता है तो लोगों का मिलना चाहिए। उसके लिए लोगों में भावना निर्माण होनी चाहिए। जैसे स्वराज्य के लिए भावना निर्माण करनी थी, वैसे ही आज ग्राम-स्वराज्य के लिए भावना निर्माण करनी है। उसके लिए जमीन की मालकियत मिटानी होगी। सबका समाधान करना होगा। जमीन एक उत्पादन का साधन है। उसकी मालकियत नहीं रहेगी और गाँव में गाँव का कपड़ा हम बनायें, इस तरह लोग संकल्प करेंगे तो खादी चलेगी। आज खादी यहाँ पैदा होती है और दिल्ली, बंबई जाकर आप बेचते हैं, वहाँ के लोग आपकी खादी खरीदते हैं और आपको ज्यादा दाम देते हैं, लेकिन अगर वे नहीं खरीदेंगे तो आपका माल पड़ा रहेगा। फिर क्या होगा? इतनी खादी क्यों पैदा करते हैं? इसलिए खादी का उत्पादन कम करो, ऐसा कहा जायेगा। फिर मजदूरों को मजदूरी कम मिलेगी। आज खादी छाती पर है, लेकिन छाती के अन्दर नहीं जाती है। ऐसी खादी सूख जायगी। वह शुष्क हो रहेगी, फल्गु नदी के जैसी बहती हुई गंगा नहीं रहेगी। उसको बहती हुई गंगा करने के लिए गाँव-गाँव के लोग संकल्प करें। उसका आधार भू-दान का काम है।

ग्राम-संकल्प के बिना खादी नहीं होगी, वैसे ही ग्रामदान नहीं होगा। भूदान से ग्राम-स्वराज्य नहीं बनता है, लेकिन वातावरण तैयार होता है। ग्रामदान का संकल्प किये बिना ग्रामदान नहीं होगा और उसके बिना खादी नहीं चलेगी। इसलिए ग्राम-स्वराज्य का संकल्प करेंगे। जिस तरह लोकमान्य ने कहा था कि स्वराज्य हमारा जन्मसिद्ध हक है, वैसे ग्राम-स्वराज्य हमारा जन्म-सिद्ध हक है, यह कहेंगे तभी खादी चलेगी। ग्राम-स्वराज्य खादी के लिए बुनियाद है।

भू-दान-कार्यकर्त्ता और खादी कार्यकर्त्ता यह भेद ही मिट जाना चाहिए। कार्यकर्त्ताओं को लोगों में जाकर ग्राम-स्वराज्य की भावना पैदा करनी चाहिए। मैं चाहता हूँ कि आपकी ताकत आप पैदा करें।

कार्यकर्त्ताओं में अध्ययन का अभाव

क्या भू-दानवाले और क्या खादीवाले—इन दिनों कोई अध्ययन नहीं करता है। बहुत कम पढ़ते हैं। आज मुझे कुछ सवाल पूछे गये हैं, जिनका जवाब मैं कई बार दे चुका हूँ। अध्ययन के बिना स्वराज्य नहीं टिकेगा। राजनैतिक पार्टी का मनुष्य चुनाव में खड़ा होता है, वह भी कोई खास अध्ययन किया हुआ रहता है, ऐसा नहीं है, पर अमुक पार्टी का होने से ही देवता बन जाता है। है तो पत्थर ही, पर देवता बन गया। अंग्रेजों के खिलाफ लड़ने वाला मनुष्य कोई भी हो, वह देवता बन जाता था। अभी भी वही हाल है, अब आपको कैसे पत्थर चाहिए? सिन्दूर लगाये हुए पत्थर चाहिए कि इमारत के लिए पत्थर चाहिए? हम कहते हैं कि ज्ञान और गुण दोनों होने चाहिए।

एक बार एक मन्त्री मुझे कहने लगे कि पहले मैं शिक्षण-मन्त्री था, बाद में कृषि-मन्त्री हो गया, लेकिन सच तो यह है कि मैं कृषि के बारे में कुछ समझता नहीं हूँ। ज्वार का दाना कौन सा और बाजरे का कौन सा, यह भी नहीं पहचानता हूँ। यह सर्विस है। आज एज्युकेशन, कल एग्रिकल्चर, परसो मिली टरी—इस तरह डिपार्टमेंट क्या सम्हालेंगे? कुर्सी पर बैठना और फाईल में हस्ताक्षर करना, इतनी ही काम नहीं है, अभी काम करने वालों के पास कोई खास ज्ञान नहीं, इसलिए उनको अध्ययन के लिए फुरसत निकालनी चाहिए, चिन्तन-मनन करना चाहिए।

आज देश को ज्ञान की जरूरत है, विद्या की भी जरूरत है। इन दिनों खादी भंडारों में जो किताबें रखी जाती हैं, वे धूल खाती हैं। उनका विशेष उपयोग नहीं होता। इसलिए मैं सुझाना चाहता हूँ कि आठ घंटे खादी का काम होता हो तो ६ घंटे खादी का काम करें और २ घंटे किताब बेचने का काम करें। विचार के बिना खादी नहीं चलेगी, भू-दान के विचार का भी गहराई से अध्ययन होना चाहिए। अपना विचार एकांगी नहीं रहना चाहिए। जो सब लोग बोलते हैं, उसको महत्त्व नहीं देना चाहिए। ज्ञान का प्रचार करना चाहिए। ज्ञान-प्रचार के बिना आपकी शक्ति कुंठित हो जायगी।

मेरा अध्ययन आज भी जारी रहता है। इसी यात्रा में मैंने जापानी और जर्मन भाषा का अध्ययन किया है। यह सारा यात्रा के दरमियान किया है। क्योंकि जितना ज्ञान मिलेगा, उतना विकास होगा। इसलिए ६ घंटा खादी और २ घंटे किताबें—इस तरह बंटवारा कर लीजिये। आप सब लोग अध्ययन कीजिये, सिर्फ बेचने से काम नहीं होगा। आपको स्वयं पढ़ना होगा। सिर्फ सर्वोदय का नहीं, दूसरे भी विचारों का अध्ययन करना चाहिए ताकि तुलनात्मक दृष्टि से हम सोच सकें। इसलिए विचार, में हम मल्ल हो जायँ, कुस्ती के लिए, विचार की कुस्ती के लिए हमेशा तैयार रहें। सूर्य जहां जायेगा, वहां से अन्धेरा हटेगा और वैसे ही जहाँ-जहाँ कार्यकर्ता जायेगा, वहाँ-वहाँ वह विचार देगा, ऐसा होना चाहिए।

◆◆◆

प्रार्थना-प्रवचन

तिरेडी (पंजाब) २६-४-'५९

उठो, जागो और काम में लगो

यहाँ के लोगों के पास हमारा विचार तो पहुँच गया, लेकिन सवाल यही है कि उस पर अमल कैसे हो? कहीं गाड़ी रुक गयी है। मेरा खयाल है कि इस प्रान्त के बड़े-बड़े लोगों का आशीर्वाद इस काम को नहीं मिल रहा है। उनका ध्यान दूसरी तरफ है। जिन बातों की तरफ उनका ध्यान है, वे अहमियत नहीं रखतीं, ऐसी बात नहीं। फिर भी वे बातें ऐसी नहीं हैं कि उनसे गाँव-गाँव के लोग उठ खड़े हो जायँ और ग्राम-स्वराज्य बने। वे तो चंडीगढ़ और देहलीवाली बातें हैं। हुकूमत के जरिये जो योजना चलती है, उसका भी महत्त्व है। लेकिन लोगों की तरफ से उत्थान नहीं होता है—लोग खुद-ब-खुद अपना काम करने के लिए जाग नहीं जाते तो केवल हुकूमत के जरिये काम नहीं होगा। ताली दोनों हाथों से बजती है। होना तो यही चाहिए कि गाँव के लोग उठ खड़े हों और कहें कि हम अपने-अपने गाँवों में ग्राम-स्वराज्य बनायेंगे, अपनी अकल से योजना बनायेंगे और काम करेंगे। फिर उसमें सरकार से कुछ मदद माँगी जाय तो वह भी मिले। लेकिन आज उल्टा हो रहा है। सरकार योजना बनाती है और लोगों से सहयोग माँगी जाती है तो वह नहीं मिलती। अतः लोगों की तरफ से उत्थान होना चाहिए।

बड़ों का सक्रिय आशीर्वाद आवश्यक

इस बात के महत्त्व का एहसास यहाँ के बड़े लोगों को हो जाय, और उनका आशीर्वाद तथा कुछ समय इस काम के लिए मिले, तभी काम होगा। बिहार और उड़ीसा में वहाँ के ऊँचे नेताओं का ध्यान इस काम की तरफ था। छोटे लोगों ने भी वहाँ बहुत काम किया है, लेकिन बड़े लोगों का आशीर्वाद भी हासिल था। उड़ीसा के सब से बड़े नेताओं के ध्यान में यह आ गया कि 'आज देश में जो स्वराज्य आया है, वह देहली, पटना और भुवनेश्वर तक रुक गया है। गाँव-गाँव में नहीं पहुँचा है। जब तक वह गाँव-गाँव नहीं पहुँचेगा, तब तक लोगों में नया जीवन नहीं आयेगा।' अतः पंजाब में आज तक जो लोग नेतृत्व करते आये हैं, समाज पर जिनका प्रभाव है, उनके दिल में यह बैठ जाय कि बाबा जो कहता है, उसे प्रथम महत्त्व देना चाहिए, तभी पंजाब का उत्थान होगा।

गहराई में उतरें

मैं चाहता हूँ कि यहाँ के लोग गहराई में जायँ। "सब में ही रम रहिया प्रभु एक।" आप लोग यह खयाल रखें कि अंदर एक रोशनी है, उसे जगाना है। यह ध्यान में आये तो ऊपर-ऊपर के मतभेद छोड़ दिये जा सकते हैं। जहाँ बड़ा मसला उपस्थित होता है, वहाँ मनुष्य दो-तीन चीजों को महत्त्व नहीं देता। मैं चाहता हूँ कि यहाँ के नेता सोचें कि गाँव के लोगों की ताकत एक हो जाय। यहाँवालों ने मुझे बताया कि आप जो कह रहे हैं, वह साझीवाला की बात है। बाँट कर खायें, किसी को कोई चीज की कमी न पड़े। गरीबी है, तो उसे भी बाँटें और अमीरी है तो उसे भी बाँटें। इस विचार में पंजाब में कोई मत-भेद नहीं हो सकता, क्योंकि वह पंजाब की अपनी चीज है। यह ध्यान में आने पर ऊपर के छोटे-छोटे मसले छोड़ दिये जायँगे और यहाँ खूब काम होगा। वेदों में कहा गया है, "समानीव आकूतिः समाना हृदयानि वः समानमस्तु वो मनः।" इस तरह हम सब का होना चाहिए।

अगर संतों के दिल काटकर वैज्ञानिकों को जोड़ दें!

इस जमाने में विज्ञान के कारण मनुष्य के हाथ में ऐसी ताकतें आयी हैं कि वह एक छोटा-सा परमेश्वर ही बन रहा है।

आज ही हमने अखबार में एक चित्र देखा, जिसमें बताया गया था कि एक कुत्ते के सिर पर दूसरे कुत्ते का सिर कलम कर दिया गया है। इस तरह अधिक शक्तियाँ हमारे हाथ में आयी हैं। बुद्धि बड़ी बन रही है। इस हालत में दिल छोटा रहे तो कशमकश चलती रहेगी। पुराने जमाने में किसी को गुस्सा आया तो वह तमाचा मार देता था, लेकिन अब पिस्तौल चलायी जाती है। बच्चे को गुस्सा आया और उसने माँ पर गोली चलायी, इस तरह की खबरें हम सुनते हैं। इसलिए दिमाग के साथ-साथ हमें अपने दिल को भी बड़ा बनाना होगा। प्रभु रामचन्द्र के हाथ में जो ताकत थी, वह आज मामूली व्यक्ति के हाथ में आ गयी है। प्रभु रामचन्द्र को डाकोटा विमान हासिल था, जो अब मामूली मंत्री को हासिल है। याने पुराने जमाने में देवताओं के हाथ में जो ताकत थी, वह अब मानव के हाथ में आयी है। लेकिन रामचन्द्र के हाथ में ताकत थी तो साथ-साथ उनका दिल भी बड़ा था। अगर यह हो जाय कि सन्तों का दिल काट कर वैज्ञानिक को जोड़ दिया जाय तो कार्य बनेगा।

यह सर्वविरोधी प्लेटफार्म

इसीलिए मैं चिल्ला-चिल्ला कर कहता हूँ कि जमाना आगे बढ़ रहा है तो उसके साथ दिल को भी बड़ा बनाओ। आज होता यह है कि एक पार्टीवाला दूसरे की निंदा करता है और दूसरा पहले की। इससे लोगों में दोनों के लिए अनादर पैदा होता है। इस तरह लोक निष्ठाविहीन बन जायँ तो क्या काम होगा? गांधीजी के जमाने में लोगों की उन पर श्रद्धा बैठी, इसलिए कुछ काम हुआ। अब ऐसा कोई नेता या विचार नहीं है, जिस पर सबकी श्रद्धा बैठे। आज कोई मामूली विचार पैदा होता है, तो उसपर भी लोगों की श्रद्धा नहीं बैठती। इस हालत में देश का काम कैसे चलेगा? इसलिए आज जो राजनीति चलती है, वह चलने दो। लेकिन एक ऐसा प्लेटफार्म बनाओ, जहाँ आप अपनी अलग-अलग पार्टी के जूते बाहर रख कर आयें और मिलकर एक काम में लग जायँ। तब लोगों में श्रद्धा बनेगी कि हमारे लिए कुछ काम हो रहा है।

खुशी की बात है कि सर्वोदय का एक ऐसा प्लेटफार्म बना है, जहाँ सभी इकट्ठा होते हैं। यह तो वसिष्ठ ऋषि का आश्रम है, जहाँ गाय और शेर आते और एक साथ पानी पीते हैं। अजमेर के सम्मेलन में सब पक्षों के नेता आये थे, जिससे एक ऐसा दृश्य दिखायी दिया कि सब को इस काम के लिए राजी किया जा रहा है। येलवाल की परिषद् को मैं इतना महत्त्व देता हूँ जितना स्वयं वे नेता नहीं देते हैं, जो उसमें शरीक हुए थे। वे कहते हैं कि इसके बाद हम कुछ काम नहीं कर पाये लेकिन मैं कहता हूँ कि आप इकट्ठा हुए, इसीमें बहुत कुछ हुआ। एक दफा एक साथ बैठने लगे, अब जरा एक साथ काम भी करना शुरू करें।

हिन्दुस्तान में भूमि का मसला एक बहुत बड़ा मसला है, जो मेरे लिए एक बहाना बन गया है। उसे हाथ में लेकर मैं देशभर घूम कर सतत विचार फैला रहा हूँ। मुझे थकान नहीं महसूस होती, क्योंकि अंदर एक झरना बह रहा है, जिससे मुझे स्फूर्ति मिलती है। मैं मानता हूँ कि यही चीज है, जिससे हिन्दुस्तान बच सकता है इसके सिवा दूसरी कोई चीज नहीं है, जिससे हम दुनिया में सर्वोदय का माहोल पैदा कर सकें।

हम किससे आशा करें?

इन दिनों धर्मवालों के झगड़े इतने बढ़ गये हैं कि उसका कोई पार नहीं। लड़नेवालों के बीच पड़कर सब को जोड़ने का काम करनेवाली जो सिख कौम है, उसके अंदर भी आज टुकड़े पड़े हैं। जैनों के पास करोड़ों रुपये हैं, लेकिन उनमें अनेक झगड़े हैं। इस हालत में 'जमीन सब की है, एक दूसरे पर प्यार करो', यह विचार समझाने के लिए धर्मवाले आगे नहीं आते, वे खुद ही मालिक बने हुए हैं। अजीब बात है कि वे समझते नहीं है कि हमारे पूर्वजों ने जो काम किया है, उसे विनोबा आगे बढ़ा रहा है। अगर अपनी जमीन की मालकियत छोड़ेंगे तो हमारा लाभ ही होगा। किन्तु वे तो बाबा को अपना दुश्मन मानते हैं। फिर रचनात्मक काम करनेवालों की ऐसी दयाजनक हालत है कि वे सरकार से मदद लेते हैं। एक मंत्री ने सुनाया कि कई अच्छी संस्थाओं में सरकारी मदद लेने के बाद गिरावट शुरू हुई। यह नहीं होता कि रचनात्मक काम करनेवालों के हृदय करुणा से भर जायँ और वे देहात के लोगों में ओतप्रोत हो जायँ। वे तो अपने छोटे-छोटे कामों में गिरफ्तार हो गये हैं। इस हालत में हम किससे आशा करें?

परमेश्वर का यह काम होकर रहेगा

इतना सब होने पर भी बाबा का उत्साह कम नहीं हो रहा है, क्योंकि उसके मन में श्रद्धा है कि परमेश्वर की मर्जी के खिलाफ कोई नहीं जा सकता। यह परमेश्वर की मर्जी का काम है, इसलिए सबको इसमें आना ही होगा। वैसे स्थिति तो इतने संकटों से भरी है कि उत्साह आने लायक कोई चीज ही दिखायी नहीं देती। लेकिन सामने जितना घना अन्धकार हो, दीपक के लिए उतना ही अच्छा होता है। मेरा मानना है कि सत्य होकर रहेगा। दुनिया में असत्य टिक नहीं सकता। इसी श्रद्धा से काम करता हुआ मैं लोगों को ढूँढ़ रहा हूँ।

[चालू]

अनुक्रम

१. शरीर-श्रम की साधना में ही सारी समस्याओं का हल…
राजपुरा २८ अप्रैल '५९ पृष्ठ ३७३

२. कर्मक्षेत्र और प्रेमक्षेत्र को जोड़िये
पटियाला २५ अप्रैल '५९ „ ३७४

३. खादी के चिन्तन को नई दिशा दीजिये
कनौलीपक्खी १९ अप्रैल '५९ „ ३७७

४. उठो, जागो और काम में लगो
तिरेडी २६ अप्रैल '५९ „ ३७९

◆◆◆

श्रीकृष्णदत्त भट्ट, अ० भा० सर्व-सेवा-संघ द्वारा भार्गव भूषण प्रेस, वाराणसी में सम्पादित, मुद्रित और प्रकाशित।
पता : गोलघर, वाराणसी (उ० प्र०) फोन : १३९१ तार : 'सर्व-सेवा' वाराणसी।